



International Journal of Research in Academic World



Received: 07/April/2026

IJRAW: 2026; 5(6):107-109

Accepted: 11/May/2026

डिजिटल युग में हिंदी भाषा और साहित्य की चुनौतियाँ

*¹डॉ. सुनिता भिमराव राठोड

*¹सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, वसंतराव नाईक महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

डिजिटल युग ने हिंदी भाषा और साहित्य को अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ई-पुस्तकें, ब्लॉग, पॉडकास्ट और डिजिटल प्रकाशन ने हिंदी के प्रसार को वैश्विक स्तर तक पहुँचाया है। दूसरी ओर, इस युग में हिंदी भाषा और साहित्य के सामने अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, जैसे भाषाई शुद्धता का संकट, अंग्रेज़ी का बढ़ता प्रभाव, साहित्यिक गुणवत्ता में गिरावट, कॉपीराइट उल्लंघन, डिजिटल विभाजन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पन्न मौलिकता का प्रश्न। यह शोध-पत्र डिजिटल युग में हिंदी भाषा और साहित्य के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का विश्लेषण करता है तथा उनके संभावित समाधान प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: डिजिटल युग, हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ई-साहित्य, डिजिटल विभाजन।

प्रस्तावना

वर्तमान समय सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग है। इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन किया है। हिंदी भाषा और साहित्य भी इससे अछूते नहीं रहे हैं। आज हिंदी केवल पुस्तकों और पत्रिकाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल मीडिया, ई-पत्रिकाओं, यूट्यूब और मोबाइल एप्लिकेशनों के माध्यम से विश्व के करोड़ों लोगों तक पहुँच रही है। डिजिटल तकनीक ने हिंदी साहित्य के प्रसार, सृजन और अध्ययन को नई दिशा दी है, किन्तु इसके साथ अनेक जटिल चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

आज का सच यह है कि हमारे चारों ओर अंग्रेज़ी का प्रभुत्वशाली साम्राज्य खड़ा हो गया है। वैश्वीकरण की इस अंधी दौड़ में, जहाँ हर तरक्की का रास्ता अंग्रेज़ी से होकर गुज़रता है, वहाँ हमारी अपनी भाषा पिछड़ती जा रही है। शिक्षा के गलियारों से लेकर कॉर्पोरेट जगत की बैठकों तक, अंग्रेज़ी एक अनिवार्य शर्त बन गई है। परिणाम यह है कि हमारी नई पीढ़ी अपनी ही जड़ों से कट रही है। स्मार्टफोन की चकाचौंध स्क्रीन पर, सोशल मीडिया की दुनिया में, अंग्रेज़ी की एकतरफ़ा बादशाहत कायम है। ऐसा लगता है, जैसे हिंदी अपनी ही धरती पर एक अतिथि बनकर रह गई है।

यह भाषाई प्रभुत्व केवल बोलचाल तक सीमित नहीं है। तकनीक के विशाल महासागर में हिंदी के लिए किनारों की कमी है। डिजिटल उपकरणों में हिंदी का समर्थन सीमित है। हमारे सॉफ़्टवेयर, ऑपरेटिंग सिस्टम और ऐप्स अभी भी अंग्रेज़ी की भाषा बोलते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उन्नत उपकरण, जैसे वॉयस असिस्टेंट और अनुवादक, हिंदी की बारीकियों को समझने में असमर्थ हैं। यह ऐसा

है जैसे हम एक विशाल भवन में हैं, पर हमारे पास प्रवेश करने की चाबी नहीं है। तकनीकी शब्दावली का अभाव और मानकीकरण की कमी इस खाई को और चौड़ा करती है। विज्ञान, चिकित्सा या इंजीनियरिंग जैसे विषयों के लिए हिंदी के पास न तो पर्याप्त शब्द हैं और न ही उन शब्दों में सर्वमान्यता। यह भाषा की प्रगति में एक बड़ा अवरोध है। इसके साथ ही, डिजिटल साक्षरता की कमी एक और गंभीर चुनौती है। हमारा ग्रामीण भारत, जो हिंदी का हृदय है, आज भी तकनीक की इस नई दुनिया से पूरी तरह नहीं जुड़ पाया है। स्मार्टफोन पहुँच गए हैं, पर उन्हें ज्ञान के प्रवेश द्वार की तरह उपयोग करने का कौशल अभी भी दूर है। यह स्थिति भाषा और तकनीक के बीच एक अदृश्य दीवार खड़ी करती है। डिजिटल युग में हिंदी लेखन ने अभूतपूर्व विस्तार प्राप्त किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, मोबाइल एप्लिकेशन, डिजिटल प्रकाशन, ब्लॉगिंग, वेब पत्रकारिता, ईलर्निंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसे उपकरणों ने हिंदी लेखन को नई दिशा प्रदान की है। पहले जहाँ हिंदी लेखन का दायरा पुस्तक, पत्रिका और अख़बार जैसे परंपरागत माध्यमों तक सीमित था, वहीं आज डिजिटल माध्यमों ने इसे वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में निर्णायक भूमिका निभाई है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों पर हिंदी सामग्री का प्रयोग तेज़ी से बढ़ रहा है। Google India, KPMG और IMAI की रिपोर्टों के अनुसार भारत के इंटरनेट उपभोक्ताओं में हिंदी भाषा का उपयोग अंग्रेज़ी से अधिक हो चुका है और आने वाले वर्षों में हिंदी इंटरनेट का नेतृत्व करेगी। इससे हिंदी लेखन के लिए नए अवसर, नए बाज़ार और नई अभिव्यक्तिशैली विकसित हुई है। डिजिटल युग में हिंदी लेखन के अवसरों का विस्तार अनेक दिशाओं में दिखाई देता है वेब पत्रकारिता, ब्लॉग लेखन, कंटेंट

राइटिंग, SEO लेखन, सोशल मीडिया लेखन, डिजिटल मार्केटिंग, ईबुक लेखन, स्क्रिप्ट लेखन, ऑनलाइन शिक्षण सामग्री और AI आधारित लेखन उपकरण इत्यादि। इन माध्यमों ने हिंदी लेखकों को वैश्विक पाठकवर्ग उपलब्ध कराया है और हिंदी सामग्री की मांग लगातार बढ़ रही है। इसी के साथ डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर हिंदी रचनात्मक लेखनकहानी, कविता, उपन्यास, विचार, समीक्षा, यात्रावृत्तांतका भी विस्तार हुआ है। हिंदी साहित्य का डिजिटल प्रस्तुतीकरण इसे नई पीढ़ी के पाठकों तक पहुंचाने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। हालाँकि, डिजिटल युग में जहाँ अवसर उपलब्ध हुए हैं, वहीं अनेक चुनौतियाँ भी हैं। तकनीकी शब्दावली का अभाव, हिंदी के मानकीकरण की समस्या, शुद्ध भाषा के प्रति उदासीनता, कॉपीपेस्ट संस्कृति, कंटेंट की विश्वसनीयता का संकट, फर्जी समाचार (फेक न्यूज़), डिजिटल प्लेगारिज्म, अल्गोरिदमिक पक्षपात (Algorithmic Bias), तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण मानव लेखन पर संभावित खतरे जैसी चुनौतियाँ सामने आई हैं। हिंदी तकनीकी लेखन में भी उचित संसाधनों व अनुवाद उपकरणों की कमी महसूस होती है। इसके साथ ही हिंदी लेखन को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए डिजिटल नीति, भाषातकनीक, अनुवाद, मशीन लर्निंग और भाषाप्रसंस्करण (NLP) पर निरंतर कार्य करने की आवश्यकता है। हिंदी के लिए अधिक मजबूत डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र (Digital Ecosystem) का निर्माण समय की आवश्यकता है। निष्कर्षतः, डिजिटल युग ने हिंदी लेखन को नई ऊर्जा, नए अवसर और नए मंच प्रदान किए हैं, परंतु इसके सुचारू और उन्नत विकास के लिए चुनौतियों का समाधान भी अनिवार्य है। भविष्य में हिंदी डिजिटल अर्थव्यवस्था, ऑनलाइन शिक्षा, सोशल मीडिया और साहित्यिक माध्यमों का प्रमुख स्तंभ बन सकती है। यह अध्ययन हिंदी लेखन की वर्तमान परिस्थितियों, चुनौतियों और संभावनाओं का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा भविष्य की दिशा में उपयोगी सुझाव देता है।

पढ़ने की आदत या वाचन (Reading) व्यक्तिगत और बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। साहित्य के माध्यम से लोग नए दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं, समानुभूति विकसित करते हैं और आलोचनात्मक सोच की क्षमताएँ बढ़ाते हैं। हालाँकि डिजिटल युग के आगमन के साथ लिखित साहित्य से लोगों के, विशेष रूप से युवा पीढ़ी के जुड़ने के तरीके में परिवर्तन आया है। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और वृहत् सूचना तक तात्कालिक पहुँच ने पढ़ने की आदतों में गहरे बदलाव किये हैं, जहाँ उत्कृष्ट पाठ्य कंटेंट या साहित्य से विचारशील सहभागिता से अधिक महत्त्व संक्षिप्तता या विजुअल अपील को दिया जाता है। पाठकीय पसंदों में बदलाव के साथ साहित्य के सामने यह चुनौती उत्पन्न हुई है कि वह डिजिटल विचलन के बीच किस प्रकार प्रासंगिक बना रहे। हालाँकि यह बदलाव नवाचार और अनुकूलन के अवसर भी प्रदान करता है। इस प्रसंग में युवा पीढ़ी के साहित्य से जुड़ने में बाधा उत्पन्न करने वाले कारणों की पड़ताल करना, प्रौद्योगिकी की भूमिका का परीक्षण करना और डिजिटल युग में वाचन के प्रति प्रेम को पुनर्जीवित करने के लिये क्रियाशील रणनीतियों पर विचार करना समीचीन होगा।

पढ़ने की आदतों में बदलाव

• पारंपरिक वाचन बनाम डिजिटल वाचन

- पारंपरिक रूप से मुद्रित पुस्तकें वाचन का प्रमुख साधन रही हैं। वे एक ऐसा स्पर्शीय अनुभव प्रदान करती हैं जो कई लोगों के लिये व्यक्तिगत और संतोषजनक होता है। किताब को हाथों में पकड़ना, उसके पन्ने पलटना और यहाँ तक कि स्याही एवं कागज़ की महक भी पारंपरिक वाचन के अनूठे आकर्षण में योगदान करती हैं। पढ़ने का यह माध्यम केंद्रित ध्यान और निर्बाध संलग्नता को प्रोत्साहित करता है, जिससे पाठक पूरी

तरह से कथा या विचारों में निमग्न हो सकते हैं।

- ई-बुक्स, ऑडियोबुक्स और लघु ऑनलाइन कंटेंट ने वाचन को एक अधिक डिजिटल गतिविधि में बदल दिया है। किंडल, ऑडिबल और ऑनलाइन ब्लॉग जैसे प्लेटफॉर्मों ने सुविधा एवं सुगमता के कारण लोकप्रियता प्राप्त की है। आज के पाठक स्मार्टफोन या ई-रीडर के माध्यम से हजारों किताबें जेब में लेकर चलते हैं, विविध शैलियों की पुस्तकों तक तुरंत पहुँच सकते हैं और यहाँ तक कि फॉण्ट को भी सुविधा अनुसार छोटा-बड़ा कर सकते हैं। इन लाभों के बावजूद, डिजिटल वाचन के कुछ दोष भी हैं जिनके कारण गहरी चिंताएँ उत्पन्न होती हैं।

• बदलाव में प्रौद्योगिकी की भूमिका

- प्रौद्योगिकी साहित्य के लिये एक दोधारी तलवार सिद्ध हुई है। इसने पढ़ने की पारंपरिक आदतों को बदल दिया है और स्ट्रीमिंग सेवा, वीडियो गेम्स एवं सोशल मीडिया जैसे अंतर्हीन विकल्प प्रस्तुत किये हैं। इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्मों ने कहानियों के उपभोग के तरीके को पुनर्परिभाषित किया है जहाँ दृश्य एवं श्रव्य प्रारूपों को प्राथमिकता दी जाती है।
- दूसरी ओर, प्रौद्योगिकीय विकास ने साहित्यिक संलग्नता के तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव लाने के अवसर प्रदान किये हैं। उदाहरण के लिये, इंटरैक्टिव स्टोरीटेलिंग ऐप्स साहित्य और गेम्स को जोड़ते हुए उपभोक्ताओं को कथा की दिशा प्रभावित करने का अवसर देते हैं। एनीमेशन, साउंडट्रैक और विजुअल के साथ किताबों के मल्टीमीडिया रूपांतरण साहित्यिक कृतियों को युवा दर्शकों के लिये अधिक आकर्षक बना सकते हैं।

• डिजिटल युग में साहित्य के समक्ष विद्यमान चुनौतियाँ

- डिजिटल युग साहित्य के लिये कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म, वीडियो गेम्स और सोशल नेटवर्क्स द्वारा प्रदान की जाने वाली तात्कालिक संतुष्टि से मुकाबला करना एक कठिन कार्य है। मनोरंजन के ये रूप कम प्रयास की मांग करते हैं, जबकि किताब वाचन के लिये सक्रिय संलग्नता, कल्पना और समय की आवश्यकता होती है।
- वर्तमान में उपलब्ध डिजिटल सामग्री की विशाल मात्रा पाठकों को अभिभूत कर सकती है। एल्गोरिदम प्रचलित या दृश्य रूप से आकर्षक सामग्री को प्राथमिकता देते हैं, जिससे उत्कृष्ट या जटिल समकालीन साहित्य पिछड़ सकते हैं।
- 'मल्टीटास्किंग कल्चर' का उदय एक अन्य चुनौती है। लोगों में दूसरे काम करते हुए किताबें पढ़ने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इस प्रवृत्ति ने ऑडियोबुक्स की लोकप्रियता को बढ़ावा दिया है, लेकिन यह पारंपरिक वाचन से गहन संलग्नता को कम कर सकती है।
- इसके साथ ही, ध्यान केंद्रित करने की अवधि में गिरावट—जो लगातार नोटिफिकेशन और शॉर्ट कंटेंट के त्वरित उपभोग से जुड़ी है—गहन एवं विचारशील वाचन के लिये खतरा उत्पन्न करती है।

साहित्यिक संलग्नता में अवरोध

• उपलब्धता की समस्याएँ

- डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने निस्संदेह साहित्य तक पहुँच को लोकतांत्रिक बना दिया है, जहाँ वैश्विक पुस्तकालय का अन्वेषण पहले से कहीं अधिक आसान हो गया है। हालाँकि महत्वपूर्ण अवरोध अभी भी मौजूद हैं। कई क्षेत्रीय और स्थानीय भाषाओं की कृतियाँ अभी भी पर्याप्त रूप से डिजिटल संग्रहण में

शामिल नहीं हैं, जिसके कारण वे संस्कृतियाँ साहित्यिक जगत में प्रतिनिधित्व से वंचित रह जाती हैं।

- ई-बुक्स और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म मुद्रित पुस्तकों से सस्ते हो सकते हैं, लेकिन इन्हें पढ़ने के लिये स्मार्टफोन, टैबलेट या ई-रीडर जैसे डिवाइस की आवश्यकता होती है, जो हर किसी के लिये सस्ती नहीं होती।
- **शैक्षिक चुनौतियाँ**
 - विद्यालयों में साहित्य पढ़ाए जाने का तरीका वाचन के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है। दुर्भाग्यवश विभिन्न शैक्षिक प्रणालियाँ अब भी पुराने पाठ्यक्रमों पर निर्भर हैं, जो आधुनिक छात्रों से जुड़ने में असमर्थ हैं।
 - विद्यालय प्रायः परीक्षा में प्रदर्शन और प्राप्तांकों को साहित्य के प्रति वास्तविक प्रेम को बढ़ावा देने से अधिक प्राथमिकता देते हैं। यह दृष्टिकोण रचनात्मक अन्वेषण या व्यक्तिगत संलग्नता के अवसर कम कर देता है।
 - एक अन्य समस्या विविध साहित्यिक अभिव्यक्तियों की कमी है। अधिकांश पाठ्यक्रम एक संकुचित चयन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जहाँ प्रायः महिलाओं, अल्पसंख्यक समूहों या गैर-पश्चिमी परंपराओं के लेखकों के कार्यों की उपेक्षा की जाती है। प्रतिनिधित्व की यह कमी उन छात्रों में को अलग-थलग कर सकती है जो अपने अनुभवों को उन पाठों में नहीं देखते जिनका वे अध्ययन करते हैं।

साहित्यिक संलग्नता को पुनर्जीवित करने के अवसर

- **प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना**
 - प्रौद्योगिकी लोगों में, विशेष रूप से युवा पीढ़ी में, साहित्य के प्रति उत्साह को फिर से जागृत करने की अपार क्षमता रखती है। रीडिंग ऐप्स, जो इनाम, चुनौतियाँ या लीडरबोर्ड प्रदान करने के रूप में अनुभव को 'गेमिफाई' करते हैं, उपयोगकर्ताओं को पढ़ाई के लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें पूरा करने के लिये प्रेरित कर सकते हैं। साहित्यिक कथाओं के साथ गेमिंग मैकेनिक्स को संयुक्त करने वाले इंटरैक्टिव स्टोरीटेलिंग प्लेटफॉर्म प्रौद्योगिकी-सक्षम व्यक्तियों को आकर्षित कर सकते हैं, जहाँ वे सक्रिय और समृद्ध तरीके से साहित्य से जुड़ सकते हैं।
 - ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) और वर्चुअल रियलिटी (VR) का उभार साहित्य के लिये रोमांचक संभावनाएँ प्रदान करता है। जीवंत अनुभव प्रदान करने वाले ऐसे नवाचार गतिशील और इंटरैक्टिव मनोरंजन के आदी युवाओं को साहित्य की ओर आकर्षित कर सकते हैं।

डिजिटल पुस्तकालयों और 'ओपन एक्सेस' को बढ़ावा देना

- डिजिटल पुस्तकालय साहित्यिक जगत में समावेशन के लिये महत्वपूर्ण हैं। एक बटन के क्लिक पर हज़ारों पुस्तकें उपलब्ध कराने के रूप में ये साहित्य तक पहुँच को विश्व भर में लोकतांत्रिक बनाते हैं। प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग और राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय जैसी पहलें निशुल्क या सस्ती ई-बुक्स प्रदान करती हैं, ताकि सुनिश्चित हो कि आर्थिक अवरोध साहित्यिक संलग्नता को सीमित न करें।
- सरकारें, गैर-सरकारी संगठन (NGOs) और शैक्षिक संस्थान साथ मिलकर बहुभाषी डिजिटल आर्काइव का विस्तार कर सकते हैं, जहाँ यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि क्षेत्रीय तथा स्थानीय साहित्य को संरक्षण एवं बढ़ावा दिया जाए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग (ML) को एकीकृत करने के

माध्यम से ये प्लेटफॉर्म व्यक्तिगत अनुशंसाएँ प्रदान कर सकते हैं, जो पाठकों को नई शैलियाँ, लेखकों या सांस्कृतिक परंपराओं का अन्वेषण करने में मार्गदर्शन प्रदान करें।

• पॉप संस्कृति में साहित्य का समावेशन

- युवा दर्शकों को साहित्य से जोड़ने का एक सबसे प्रभावी तरीका इसे पॉप संस्कृति में समाहित करना हो सकता है। क्लासिक उपन्यासों का फिल्में, वेब सीरीज़ या ग्राफिक नॉवल्स में रूपांतरण उन्हें सुलभ एवं संबंधित बना देता है। ऑडियोबुक और साहित्यिक पॉडकास्ट मल्टीटास्कर्स को आकर्षित कर सकते हैं।
- लेखकों और अन्य रचनात्मक उद्योगों के बीच सहयोग क्रॉस-मीडियम अनुभव का सृजन कर सकता है जो विविध दर्शकों/श्रोताओं को एक साथ आकर्षित कर सकता है।

निष्कर्ष

हिंदी आज एक ऐसे चौराहे पर खड़ी है जहाँ एक ओर परंपरा है और दूसरी ओर आधुनिकता। चुनौतियाँ हैं, परन्तु संभावनाएँ कहीं अधिक व्यापक और उज्ज्वल हैं। यदि हम हिंदी को तकनीक का सारथी बनाएँ, उसे ज्ञान और विज्ञान की भाषा के रूप में समृद्ध करें, और उसे नई पीढ़ी के दिलों-दिमाग तक पहुँचाने का सामूहिक प्रयास करें, तो यह भाषा न केवल भारत की पहचान बनेगी, बल्कि वैश्व सांस्कृतिक संवाद में अपना गौरवशाली स्थान पुनः प्राप्त करेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जोशी, किरण, हिंदी भाषा और डिजिटल युग: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षा और सामाजिक संचार में संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ।
2. मिश्र, विद्यानिवास हिंदी भाषा और समाज, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
3. सिंह, आर. डिजिटल युग में हिंदी साहित्य अवसर और चुनौतियाँ, साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली
4. गुप्त अंजली, डिजिटल युग में हिंदी साहित्य, मुंबई, वाणी प्रकाशन।